आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024
Received: 31/08/2024; Accepted: 02/09/2024; Published: 26/09/2024

भारतीय नेपाली साहित्यिक पत्रिकाएं-एक अवलोकन

- तुलसी छेत्री
शोधार्थी
जैन संभाव्य विश्वविद्यालय, बैंगलोर

तुलसी छेत्री, **भारतीय नेपाली साहित्यिक पत्रिकाएं-एक अवलोकन**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक3/सितंबर 2024,(196-201)

सार :

नेपाली भाषा संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित है। नेपाली भाषा को यह दर्जा दिए जाने का मतलब है कि यहां इस भाषा का समृद्ध साहित्यिक अस्तित्व मौजूद है। कुछ प्रमुख घटनाओं जैसे - सिक्किम का भारत में विलय हो कर उसे भारतीय संघ में बाईसवें राज्य का दर्जा प्राप्त होना (सन् १९७५), नेपाली भाषा आंदोलन, पूर्वोत्तर भारत आंदोलन, असम आंदोलन(सन् १९७९-१९८३), गोरखालैंड आंदोलन(सन् १९७७ -१९८१) ने इस काल के नेपाली साहित्य को भी प्रभावित किया। भारत में नेपाली भाषा में प्रकाशित होने वाली साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं की एक सुदीर्घ परंपरा रही है। इनका नेपाली भाषा एवं साहित्य के विकास एवं अभिवृद्धि में उल्लेखनीय योगदान रहा है।

प्रस्तावना :

नेपाली भाषा-भाषी समाज संपूर्ण भारत में बिखरा हुआ समाज है। कुछेक प्रांतों में जरूर इसकी बसावट सघन है। इन्हीं इलाकों में ही नेपाली साहित्य सृजन की एक लंबी परंपरा हम पाते हैं। यह समाज अपनी भाषायी व सांस्कृतिक अस्मिता में नेपाल के साथ नाभिनालबद्ध है। वहां होने वाली उथल-पुथल से यह भी बिना स्पंदित हुए नहीं रहता है। नेपाल भूमि के साथ उसका यह भावनात्मक जुड़ाव हम नेपाली भाषा के साहित्य एवं पत्रिकाओं में देख सकते हैं। कहना न होगा कि नेपाल के साथ सिर्फ नेपालियों का ही नहीं बल्कि भारतीयों का भी वही संबंध है। दोनों के धार्मिक, सांस्कृतिक पहचान एक हद तक मिलते-जुलते हैं। यही कारण है कि नेपाल की घटनाएं भारतीय जन समुदाय एवं बुद्धिजीवी वर्ग पर भी असर डालती रही हैं। इसको अतीत में देखे तो नेपाली मुक्ति संग्राम में असंख्य भारतीयों ने अपना योगदान दिया था। हिंदी में रेणु इसके उदाहरण हैं। उनके

रिपोतार्ज 'नेपाली क्रांति कथा', में हम इसे देख सकते हैं। अतः नेपाली साहित्य जो भारत में रचा गया है वह नेपाली भारतीय रूप लिए हुए हैं । भारतीय नेपाली पत्रिकाओं ने इस साझेपन को, इस साझी अस्मिता को अभिव्यक्त एवं आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

नेपाल में राणा शासन की निरंकुशता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबन्ध ने नेपाली शिक्षित वर्ग को भारत की ओर पलायन करने पर मजबूर कर दिया । भारत में बढ़ते औद्योगीकरण और आधुनिक शिक्षा से प्रभावित हो नेपाली साहित्य भारत में फलने फूलने लगा । भारतीय नेपाली साहित्य के उत्थान के लिए साहित्यकारों ने भारत में ही विविध स्थानों को अपनी कर्म भूमि के रूप में चुना जिसमें काशी, दार्जिलिंग, देहरादून,असम आदि स्थान मुख्य हैं। दमनकारी व्यवस्था से स्वतंत्र समाज के निर्माण में नेपाली साहित्य का योगदान अतुलनीय है।

भारतीय नेपालियों का भारत में दो प्रकार का समुदाय है। पहले वे जो भारतीय नागरिक है और इस देश के उत्तरी और पूर्वोत्तर इलाके में मुख्यतः रहते हैं। दूसरा समुदाय उन लोगों का है जो मूलतः: नेपाली नागरिक है और रोजगार या अन्य कारणों से भारत आए हैं। ये दोनों समुदाय भौगोलिक और राजनीतिक पहचान के लिहाज से बंटे हुए हैं, लेकिन उनकी भाषा साहित्य और संस्कृति उन्हें एक बनाती है। कमलेश्वर ने अपनी पुस्तक 'भारतीय शिखर कथा कोश' में इन्हीं दो समुदायों का स्पष्टीकरण देते हुआ लिखा है -नेपाली कहानी की भूमिका लिखने की तैयारी में जब इस साहित्य के आलोचनात्मक ग्रंथों का अध्ययन शुरु किया तो नेपाली कहानी से संबंधित दो शीर्षक देखने को मिले। पहली तरह के शीर्षक तो सीधे 'नेपाली कहानी' कहकर पाठकों से संबोधित थे जैसे - सिंधी कहानी, मराठी कहानी आदि। पर दूसरी तरह के शीर्षकों में लेखकों को 'नेपाली कहानी' के पूर्व भारतीय शब्द जोड़ने की जरूरत महसूस हुई अर्थात शीर्षक हुआ 'भारतीय नेपाली कहानी'! नेपाली कहानियां और उसकी आलोचनाएं पढ़ने के बाद महसूस हुआ कि यह दोनों ही शीर्षक अपनी जगह पर ठीक हैं। पहले शीर्षक की सार्थकता यह है कि दोनों देशों - भारत और नेपाल की बहुसंख्यक आबादी के धर्म और संस्कृति की एकता ही वजह से एक साहित्य के इतिहासकार के लिए यह बहुत मुश्किल है की वह भारत और नेपाल के लेखकों को अलगा सके।

नेपाली साहित्य की विकास - यात्रा के दौरान यह तथ्य सामने आया की नेपाली भाषा की जड़ें भारत में बहुत गहरी हैं। लेकिन जब हम व्यवहारिक रूप से जब हम नेपाली साहित्य बोलते हैं तो सबसे पहले हमारे दिमाग में नेपाल का खाका सामने आ जाता है और आम आदमी के दिमाग में सहज ही यह बात अभी नहीं पाती की नेपाली भारत की भाषा भी है - मलयालम और गुजराती की तरह यहां भी वर्षों से इस भाषा में साहित्य रचा जा रहा है। संभवतः भारतीय नेपाली कहानी शीर्षक देने की भी यही वजह रही हो"1

साहित्य अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त होने और ७१वें संशोधन मे कोंकणी और मणिपुरी भाषा के साथ नेपाली भाषा को भी आठवीं अनुसूची में जोड़े जाने के पश्चात जातीय अधिकार के लिए विद्रोह का स्वर मुखरित हुआ राजेंद्र ढकाल, नील बहादुर छेत्री, रूप नारायण सिंह खड़क, राजगिरी इससे जुड़े प्रमुख नाम है ।

पारस मणि प्रधान, धरणीधर शर्मा, महानंद सपकोटा, अगम सिंह गिरी, नरेंद्र कुमार आदि अनेकों साहित्यकारों ने साहित्य के माध्यम से अपनी पहचान यहां बनाई।

नेपाली भाषा और साहित्य को अपनी वर्तमान स्थिति तक पहुंचाने में साहित्यिक पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सन् १९०२ में 'गोरखा-पत्र' नाम की पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ जिनमें बंगला और संस्कृत से अनुदित कहानियां प्रकाशित होती थीं, जिनका मुख्य लक्ष्य पाठकों का मनोरंजन और नैतिकता की शिक्षा देना होता था। सन् १९१८ ई. में साप्ताहिक पत्रिका 'गोरखाली' प्रकाशित होने लगी जिसमें पहली बार भारत और नेपाल के नेपालियों की सामाजिक और राजनीतिक दशा पर चर्चा हुई। इसी समय दार्जिलिंग से 'चंद्रिका' पत्रिका का प्रकाशन भी शुरू हुआ। ठाकुर चंदन सिंह द्वारा देहरादून से संपादित 'गोरखा संसार', शिलांग से मणि सिंह गुरुंग संपादित 'तरुण गोरखा', साहित्यिक पत्रिकाओं में समाज में व्याप्त भेदभाव के साथ-साथ सामाजिक यथार्थ के दर्शन होते हैं। इन्हीं पत्रिकाओं ने भारतीय नेपाली साहित्य में कहानी विधा के विकास का आरंभ किया। रामसिंह गोरखा रचित 'एउटा गरीब सार्की की छोरी' में समाज सुधार, जातिवाद और वर्ग भेद के विरोध का स्वर मुखरित हुआ। सन् १९३४ 'शारदा' (नेपाली) नेपाल की एक मासिक नेपाली साहित्यिक पत्रिका थी। यह सबसे लोकप्रिय और प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका में से एक थी। नेपाली साहित्य के रोमांटिक काल में 'शारदा' पत्रिका की भूमिका उल्लेखनीय थी। यह पत्रिका आधुनिक साहित्य की सभी विधाओं की रचनाएँ प्रकाशित करती थी। 'शारदा' पत्रिका ने नेपाली साहित्य में आधुनिकता लाने में अहम् भूमिका निभाई। इनमें लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा, बालकृष्ण सम, लेखनाथ पौडयाल, सिद्धिचरण श्रेष्ठ, राम कृष्ण शर्मा, हृदय चंद्र सिंह प्रधान, भवानी भिक्षु, पुष्कर शमशेर, बिश्वेश्वर प्रसाद कोइराला और शिव कुमार जैसे कई लोकप्रिय लेखकों के लेख प्रकाशित होते थे।

सन् १९६१ में दार्जिलिंग से ईश्वर बल्लभ संपादित साहित्यिक पत्रिका 'फूल पात पत्कर' ने नेपाली साहित्य के परंपरागत लेखन शैली को वस्तुवादी लेखन शैली में परिवर्तित कर दिया। ईश्वर वल्लभ, बैरागी कोईला और इंद्र बहादुर राय ने 'तिसरो आयाम' नामक पत्रिका के माध्यम से इस लेखन शैली का आह्वान किया जिसमें भाव और विचार के साथ दर्शन का समावेश हुआ और इस तरह भारत में नेपाली साहित्य के लिए नए अवसरों का सृजन किया गया।

सन् १९७०, गुवाहाटी (असम) में 'नवध्वनी संगठन' की स्थापना के बाद अनुराग प्रधान के संपादन में साहित्यिक मासिक पत्रिका 'हाम्रो ध्वनि 'का प्रकाशन शुरू हुआ। इस पत्रिका में नए रचनाकारों को स्थान दिया गया, युगीन त्रास, घुटन, नारी विमर्श, एकाकीपन जैसे विषयों पर लेख लिखे गए इसके साथ ही जातीय अधिकार के लिए विद्रोह का स्वर मुखरित हुआ। 'चंद्रिका', 'गोरखा संसार', 'नेपाली साहित्य सम्मेलन पत्रिका' प्रमुख पत्र पत्रिकाएं रही जिसमें नेपाली भाषा की एकरूपता के लिए साहित्यकारों ने प्रयास किया। इससे पूर्व

नेपाली भाषा के लिए 'गोर्खाली' भाषा शब्द का प्रयोग होता था। अब वह नेपाली भाषा के रूप में जानी जाने लगी।

सन् १९८७ कोलकाता से गोरखनाथ पूजा समिति द्वारा 'गोरखनाथ पूजा स्मारिका' का प्रकाशन किया गया। सन् १९८८ में इसका नाम बदलकर 'नौलो' किया गया। यह वार्षिक रूप से प्रकाशित पत्रिका है, यह आज भी प्रति वर्ष प्रकाशित हो रही है। नेपाली भाषा और साहित्य के विकास में इन पत्र-पत्रिकाओं का योगदान अतुलनीय है। 'इंद्रेणी', 'रूपरेखा','प्रज्ञाकविता', 'सेवा', 'दीपक', 'सोझो बाटो', 'दियो', 'हिमानी', 'साहित्य संध्या', 'अरुणोदय', 'सहयात्री', 'दियालो' जैसी अनेकों साहित्यिक पत्रिकाओं ने विभिन्न विषयों को साहित्य के माध्यम से परिलक्षित किया।

लेखक नवराज रिजाल ने नेपाल पत्रकार संघ की स्मारिका में भारतीय नेपाली साहित्यिक पत्रिका का उल्लेख करते हुए लिखा -

"प्रवासका बनारस, देहरादुन, दार्जिलिङ्, मेघालय, नागालैण्ड , मणिपुर , शिमला वा आसाम र नेपाल जहाँ जहाँबाट समूहगत वा एकल प्रयासमा आजसम्म साहित्यिक पत्रपत्रिका प्रकाशित भए ती सबै रहर वा कर्तव्यबोधका परिणाम हुन् । कतिपय प्रकाशन बन्द पनि भएका छन् र कतिपय मनहरूमा रहर जन्मेर गति लिने क्रम पनि चलिरहेको छ । यसो त यसको क्रम भङ्गता कसैले गर्न सक्दैन । जस्तो सुकै परिवेशमा पनि साहित्यिक पत्रकारिता निरन्तर चलिरहेको छ अर्थात् रोकिएका छैनन् ।"

(अनुवाद-

"प्रवास के बनारस, देहरादून, दार्जिलिङ्, मेघालय, नागालैण्ड, मणिपुर, शिमला और असम तथा नेपाल इन सभी स्थानों से सामूहिक या एकल रूप मे साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रकाशन साहित्यकारों के कर्त्तव्यबोध का परिणाम है। इनमें से कई पत्रिकाओं का प्रकाशन अभी बंद हो चूका हैं और अभी कुछ नए प्रकाशन शुरुआती दौर में हैं। इस क्रम को कोई भी भंग नहीं कर सकता। परिस्थिति जैसी भी रही हो साहित्यिक पत्रकारिता का प्रकाशन जारी है अर्थात ये रुका नहीं है।") 2

(नवराज रिजाल, नेपाल पत्रकार महासंघ -२२वां अधिवेशन स्मारिका २०७७ वि.सं)

हिंदी साहित्य की अनेकों विचारधाराओं- गांधीवाद, मार्क्सवाद, यथार्थवाद, प्रतीकवाद, मनोविश्लेषणवाद, का भारतीय नेपाली साहित्य में प्रभाव देखा गया। भारतीय नेपाली साहित्य में सन् १९७६ के बाद का समय नवलेखन कालखंड के रूप में जाना जाता है। इस काल के आते-आते भारतीय नेपाली समुदाय नवीन शिक्षा के प्रचार प्रसार एवं विज्ञान के विकास के कारण नवीन सोच, नवीन चेतना पैदा करता है। विभिन्न विचारधाराओं के प्रभाव के कारण इस काल को विद्वानों ने संक्रमण काल भी कहा है। युगीन समस्याओं के निरूपण के साथ-साथ इस काल में भारतीय नेपाली साहित्यकारों ने अपनी जाति लड़ाई का अभियान भी जारी रखा । असम निवासी हरि भक्त कटुवाल (सन् १९३५ -सन १९८०) ने अपनी यथार्थ और प्रगतिशील रचनाओं द्वारा जातीय जागरण की जटिल और संघर्ष पूर्ण स्थितियों से पाठकों को अवगत कराया। हरिभक्त को राष्ट्रीय मूल प्रवाह के कवि से सम्बोधित कर उनकी तुलना तमिल कवि सुब्रह्मणियम भारती (सन् १८८२ -१९२९) से की जाती है।

'सोल्टी' (दियालो पत्रिका, अंक १३ पृ.२७) 'चिनी'(मधुपर्क पत्रिका, वर्ष १६, पृ ७) पत्रिकाओं में प्रकाशित हरिभक्त के लेखों में विषयवस्तु के अनुसार नवीन तथा प्राचीन दोनों रूपों में जीवन शैली को अभिव्यक्त किया।

बनारस से सदाशिव शर्मा संपादन में प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका 'उपन्यास तरंगणी' (वि.सं १९५९),रसिक शर्मा संपादित 'सुंदरी' (वि.सं १९६३) सूर्य विक्रम ज्ञवाली के संपंदान में प्रकाशित 'जन्मभूमि' (वि.सं१९७१) काशी बहादुर श्रेष्ठा द्वारा सम्पादित 'उदय' (वि.सं.१९९३) पारसमणि प्रधान के संपादन में प्रकाशित 'चन्द्रिका'(वि.सं १९७४), लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा संपादित 'युगवाणी'(वि.सं २००४) आदि जैसी श्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिकाएं अपने दौर के साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनमें से कुछ पुरानी और प्रतिष्ठित लघु पत्रिकाएं तथा कुछ नयी पत्रिकाएं अविस्मरणीय विशेषांक प्रकाशित कर धीरे-धीरे पृष्ठभूमि में चली गयी। साहित्यिक पत्रिकाओं का इतिहास साहित्य के इतिहास का अटूट हिस्सा है और साहित्य का इतिहास समग्र सांस्कृतिक और सामाजिक इतिहास का अंग है। साहित्यिक पत्रिकाएं समाज में सांस्कृतिक विवेक, स्वतंत्रता चेतना और विचारोत्तेजक किंतु संवेदनात्मक साहित्य के प्रति रुचि पैदा करती है।

निष्कर्ष :

नब्बे के दशक से शुरू हुए आर्थिक उदारीकरण के बाद पत्रिकाएं साहित्य पर हावी होती गई हिंदी ही नहीं प्रायः सभी भारतीय भाषाओं की पत्रिकाओं ने साहित्य समझ के अनुरूप समाज को प्रभावित किया । सामाजिक हितों से संबंधित विभिन्न विमर्शों में इन पत्रिकाओं का अपना अलग स्थान है । सामाजिक,राजनीतिक,सांस्कृतिक जागृति, ज्वलंत मुद्दो एवं विचार जगत की समस्याओं को साहित्यिक पत्रिकाएं केंद्र में रख कर चली, इन मुद्दों पर सहमति - असहमति का दौर भी साथ-साथ चलता रहा।

भारत के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले बहु-जातीय, बहु-धार्मिक और बहुभाषी लोगों के साथ-साथ नेपाली लोगों को भी समय-समय पर जातीय और क्षेत्रीय मुद्दों सहित कई समस्याओं का सामना करना पड़ा । इसके बावजूद, वे जातीय अस्तित्व को संरक्षित करते हुए साहित्य का निर्माण जारी रखे हुए हैं। यह संघर्ष इन्हीं पत्रिकाओं में प्रकाशित सृजनात्मक साहित्य में स्पष्टत: परिलक्षित होता है। यहाँ एक विशेष बात यह भी स्मरणीय है कि 'भारतीय नेपाली साहित्य' का इतिहास इन्हीं सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाओं में से ही उभरकर सामने आता है और इसी से नेपाली साहित्य की विकास यात्रा का स्वरूप बनता है।

संदर्भ:

1. कमलेश्वर, भारतीय शिखर कथा कोश, नेपाली कहानियां -१, पृ. संख्या ५
2. नवराज रिजाल, नेपाल पत्रकार महासंघ -२२वां अधिवेशन स्मारिका २०७७ वि.सं
3. भारतीय साहित्य का निर्माता -हरिभक्त कटुवाल, जीवन नामदुंग, साहित्य अकादमी -पृ ८७

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. नाभा सापकोटा, 'परिवार' वॉल्यूम 1, मार्च 2015
2. हेमंत कुमार सइकिआ, 'सपरिवार' वॉल्यूम 2 ,2009
3. अनुराग प्रधान,'हाम्रो ध्वनि',दिसंबर २००२
4. ताना शर्मा नेपाली साहित्यको इतिहास, संकल्प प्रकाशन, काठमांडू,1972
5. जीवन नर्मदुंग, पर्यवेक्षण, दार्जिलिंग, श्याम ब्रदर्स प्रकाशन,1992
6. असित राई, भारतीय नेपाली साहित्य को विकासक्रम, नेपाली अकादमी,1986
7. कुमार प्रधान,पहिलो प्रहर ,दार्जिलिंग,श्याम प्रकाशन, 1981
8. विद्यापति दहाल, भारतीय नेपाली साहित्यको इतिहास,2014
9. रूद्र बराल, ब्रह्मपुत्रका लिगेसीहरु(निबंध संग्रह),2021
10. खेमराज नेपाल,पूर्वोत्तर भारतको नेपाली साहित्यको इतिहास,2021
11. यज्ञराज सत्याल,नपेाली साहित्यको भूमिका-श्रापाँच सरकार, प्रकाश विभाग,1961
12. डॉ गोमा देवी, भारतीय नेपाली साहित्यको विश्लेषणात्मक इतिहास, गोरखा ज्योति प्रकाशन,2019

****